* महिला सशक्तिकरण से आप क्या समझते है? इसके आवश्यकता एवं महत्व का वर्णन करें।

Page No.-1.

उत्तर :- महिला सशक्तिकरण का अर्थ होता है महिलाओं को शक्तिशाली बनाना, महिलाओं को वो सारे उपकरण उपलब्ध करवाना जिनकी सहायता से "आधी दुनिया" उन्नति कर सकती है, आगे बढ़ सकती है। आज जहां पूरी दुनिया में महिला सशक्तिकरण का दौर है और इस विषय पर सेमिनार हो रहे है, कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही है और सरकार द्वारा विभिन्न नियम-कानून बनाए जा रहे है। लेकिन बात है हमारी सफलता की जो हम कहां सशक्त हुए हैं। जब अनेको महिलाओं ने भारत की आजादी की लड़ाई में सक्रिय रुप से भाग लिया तभी से महिलाएँ जीवन के सभी क्षेत्रों में आगे आने लगी। इसी दौरान पुरातन-पुरातन परम्पराओं का विरोध भी शुरु हो गया जैसे- बाल-विवाह, सती-प्रथा इत्यादि। जब महिलाएँ हर क्षेत्र में काम करने लगी और सफलता पाने लगी तभी महिलाओं के लिए कानून में व्यापक संशोधन किए गए ताकी महिलाएं की सामाजिक, आर्थिक तथा पारिवारिक स्थिती में सुधार हो सके। साथ ही हिन्दू स्त्रधिकार अधिनियम

Scanned with CamScanner

1950 के अनुसार — माता-पिता की संपत्ति में पुत्रियों को पुत्रों के समान ही संपत्ति का अधिकार दिया गया था लेकिन उस समय इसे समय लागू नहीं होने दिया गया था जो कि सन 2005 में केन्द्र सरकार ने इसे 2005 में लागू कर दिया। साथ ही 1978 में बाल-विवाह अधिनियम (संशोधन) के द्वारा लड़कियों की विवाह की आयु 15 वर्ष से बढ़ाकर 18 वर्ष कर दी गई और बाल-विवाह को संज्ञेय अपराध घोषित कर दी गई। इसके बाद भारतीय संसद ने भारतीय साक्ष्य अधिनियम, भारतीय दण्ड संहिता और अपराध प्रक्रिया संहिता आदि में व्यापक संशोधन किए गए ताकि महिला उत्पीड़न के मामले रोके जा सके।

जैसा की हम जानते है आर्थिक विकास के बिना कुछ भी संभव नहीं है इसलिए महिलाओं के लिए बहुत सारे कार्यक्रम चलाए गए जैसे - ग्रामीण विकास कार्यक्रम, स्वरोजगार प्रशिक्षण, महिला एवं बाल-विकास कार्यक्रम इत्यादि। सन 1998 में केन्द्र सरकार द्वारा "स्वशक्ति" नामक योजना चलाई गई। इसका उद्देश्य था महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण। सन 1992 में 73 संविधान संशोधन भारत की संसद द्वारा पारित किया गया जिसके आधार पर पंचायती संस्थाओं में महिलाओं को 33% आरक्षण दिया गया। इससे महिलाओं को राजनैतिक

रूप से एक नई ताकत भी मिली। जिसका परिणाम यह हुआ कि भारत में महिला सशक्तिकरण आंदोलन एक नए दौर से गुजर रहा है जिसका उदाहरण 2004 में जब राष्ट्रपति भवन में आजादी के 60 सालों में पहली बार किसी महिला ने राष्ट्रपति के रूप में कदम रखा जिनका नाम था श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल तो देश में महिला सशक्तिकरण का जोश भर गया। इसके बाद कई अनेक उदाहरण प्रस्तुत कर रही है जैसे - श्रीमती सोनिया गाँधी, कुमारी मायावती, नजमा हेपतुल्ला, श्रीमती शीला दीक्षित, विजया राजे सिंधिया आदि। यहाँ तक की कु० मायावती चौथी बार मुख्यमंत्री है जो कि एक दलित परिवार से मजबूत इरादे के साथ आगे बढ़ रही है। यह महिला सशक्तिकरण का ही प्रभाव है कि कु० मायावती को अब देश की भावी प्रधानमंत्री के रूप में देखा जा रहा है।

इस प्रकार देखा तो महिलाओं के अंतर्गत कुछ महत्वपूर्ण सशक्तिकरण इस प्रकार देखने को मिल रही है। जैसे - पारिवारिक सशक्तिकरण, सामाजिक सशक्तिकरण, सांस्कृतिक सशक्तिकरण, आर्थिक सशक्तिकरण, राजनैतिक सशक्तिकरण, धार्मिक सशक्तिकरण, कार्य-विषय सशक्तिकरण, मनोवैज्ञानिक एवं संवैगिक सशक्तिकरण आदि

जैसा की हम अनुभव करते है की महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता और महत्व प्रत्येक क्षेत्र में आवश्यक है जैसे कि —

Page - 4

— लिंगीय भेदभाव की कमी हेतु —

वर्तमान समाज में लिंगीय भेदभाव चरम सीमा पर है जिसके कारण अपराधों का जन्म हो रहा है जो कि घर और बाहर, सार्वजनिक स्थलों पर देखने को मिल रही है क्योंकि स्त्रियों को प्रारम्भ से ही पुरुषों के नियंत्रण में रखा जाता है जिससे स्त्रियों में अपनी शक्तियों की पहचान नहीं हो पाता है और लिंगीय भेदभाव का जन्म होता है।

— सभ्य समाज हेतु →

महिलाओं का सशक्तिकरण उन्हें अधिक कर्तव्यनिष्ठ, कुशल तथा जवाबदेह बनाता है और वे घर और बाहर की जिम्मेदारियों का निर्वहन सफलतापूर्वक करती है। जैसे कि संतानों का पालन-पोषण स्वास्थ्य सम्बंधी परेशानियाँ इत्यादि। जिससे सैद्धिक दृष्टिकोणों का विकास होता है और सभ्य समाज का निर्माण होता है

—व्यक्तिगत विकास से राष्ट्रीय विकास हेतु →

इसके अंतर्गत महिलाओं की शिक्षा पर बल दिया जाता है जिसके द्वारा वे व्यावसायिक कौशल प्राप्त करती है और स्वावलम्बी बनकर व्यक्तिगत उन्नति के साथ-२ राष्ट्र की उन्नति में भी योगदान देती है

Scanned with CamScanner

Page-5

सांस्कृतिक संरक्षण हेतु →

सांस्कृतिक संरक्षण में महिलायें महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करती आई है यदि महिलायें सशक्त होंगी तो वे अच्छी परम्पराओं को आने वाली पीढ़ियों के लिए विकसित कर हस्तान्तरित करेंगी।

आर्थिक सुदृढ़ता हेतु →

जैसा की हम जानते हैं महिलाओं को आधी आबादी के रूप में माना जाता है परन्तु उनका उपयोग सही ढंग से नहीं हो रहा है जिसके कारण परिवार तथा अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है इसलिए आर्थिक रूप से सशक्त महिलायें अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन भली प्रकार करती है और राष्ट्रीय उन्नति में भी योगदान देती है

पारिवारिक सुख शांति हेतु →

जिस परिवार में स्त्री पुरुष दोनों सक्षम, शिक्षित तथा स्वावलंबी है जिससे आपसी सुख-शांति आयेगी। इस प्रकार पारिवारिक सुख शांति के लिए महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता अधिक है

प्रजातांत्रिक सफलता हेतु →

इसके लिए भी महिलाओं का सशक्तिकरण अत्यावश्यक है जैसा की

pg-6

जैसा हम जानते हैं प्रजातंत्र में महिला तथा पुरुष में कोई भेदभाव नहीं है दोनों को समान अधिकार, स्वतंत्राएँ और न्याय प्राप्त है। अतः महिला को सशक्त प्रजातांत्रिक स्वप्न को साकार किया जा सकता है।

विश्व-शांति तथा सद्भाव हेतु →

इसकी स्थापना में महिलाओं का योगदान अविस्मरणीय रहा है जैसे हम महसूस करते है की महिलाओं ने अपने करुणा, त्याग-भाव और सेवा-भाव से संपूर्ण विश्व शांति और सद्भाव का पाठ के लिए महिलाओं का सशक्त होना अति आवश्यक है।

अतः जब महिलाएं सशक्त होंगी तब देश भी उन्नति करेगा जो की पीढ़ी दर पीढ़ी तक चलेगी क्योंकी जब एक महिला पढ़ती है तीन पीढ़ीयां पढ़ती हैं।